Vol 4 Issue 6 Dec 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-4 | Issue-6 | Dec-2014
Available online at www.aygrt.isrj.org

GRT

वेब मीडिया और हिन्दी भाषा

सुनिता क्षीरसागर

असिस्टंट प्रोफेसर, एस. के. सोमया महाविद्यालय

सारांश :- आजकल मीडिया पर सूचना प्रौद्योगिकी का वर्चस्व है । समाचार – संकलन हेतु मोबाईल फोन से लेकर लैपटॉप का प्रयोग हो रहा है । समाचार–पत्र का कार्यालय लैपटॉप पर आधारित है । संवाददाता, ब्यूरोचीफ, समाचार सम्पादक अपने–अपने टर्मिनल (पीसी) पर लगे कम्प्यूटर पर समाचार को भाषायी, तकनीकी तथा संस्थान की नीति के आधार पर अन्तिम रूप देते हैं । सम्पादकीय विभाग, प्रोसेस यूनिट विज्ञापन के बीच तालमेल बैठाने एवं फोटोग्राफी के संन्दर्भ में आईटी की प्रभावकारी भूमिका निभाता है ।

प्रस्तावना :

आधुनिक संचार साधनों ने पत्रकारिता को पूर्णतः परिवर्तित कर उसे एक नई दिशा प्रदान की है । समाचारों की गति तीव्र से तीव्रतम होती जा रही है । समाचार माध्यमों में गलाकाट प्रतिद्वंद्विता बढ रही है । सारे संसार को सबके द्वार पर पहुँचानेवाले अखबार से जिन्दगी निखर जाती है । तीखे तेवर, मिठास में डूबी सजग सतर्क पत्रकारिता द्वारा जन–जन से जन–मन तक पहुँचा जा सकता है । सच को जिन्दा रखने के रहस्य और मोहक पत्रकारिता में प्रवेश पाने के लिए अत्याधुनिक तकनीकि औा विद्या से सुपरिचित होना नितांत आवश्यक है ।

देखना, सुनने से अधिक प्रभावी होता है, इसमें कोई संदेश नहीं । हमारे लोकतंत्र की विशेषता यह है कि अनसंख्या के मामले में हमारा कोई मुकाबला नहीं । परन्तु विडम्बना यह है कि अधिसंख्य लोग निरक्षरता के साथ जीवन जीने को अभिशप्त हैं ।

मनुष्य में समाचार जानने की जिज्ञासा अनादिकता से ही रही है । प्राचीन काल में जब समाचार–पत्र या पत्रकारिता प्रारंभ नहीं हुई थी उस समय लोगों को समाचार जानने की ललक रहती थी । राजाओं द्वारा नियुक्त डुगडुगी बजाकर मुनादी करनेवाले कर्मचारी जनता तक समाचार पहुँचाने का एकमात्र साधन थे । लेकिन बदलते समच के अनुरूप समावरों की माता भी बदलती गई । ज्यों–ज्यों मानव समाज बढता गया उसके चारों तरफ तरह–तरह की घटनाओ ने जन्मना शुरू कर दिया । ऐसे में समाचार के माध्यम से उनकी जानकारी देना आवश्यक होता गया।

भारतीय भाषा परिषद् के पुरस्कार समारोह के अवसर पर दिल्ली में मराठी के लब्ध प्रतिष्ठित लेखक श्री वृंदा करंदीकर ने राष्ट्रपति जी से पूछा था कि स्वाधीनता के बाद संस्कृत – भाषा और साहित्य में अध्ययन–अध्यापन की रूचि पूरी तरह से समाप्त क्यों हो गई है ? तब राष्ट्रपति जी ने कहा था–

''हम स्वाधीनता के बाद मानसिक रूप से अधिक गुलाम हो गए हैं ।''

आज बोलचाल की भाषा में प्रांतीय और क्षेत्रीय भाषाओं के समांतर अंग्रेजी शब्द भी धडल्ले से बोले जाते है । हम उसे 'सहज' भाषा मानने लगे हैं । लेकिन हमें भूलना नहीं चाहिए कि बाजार की भाषा छोटे प्रयोजनों की भाषा तो हो सकती है, सहज नहीं । कबीर की पंक्ति याद आती है–

''सहज सहज कर न कोई कहे, सहज न बूझे,
जिन सहजैं विषया तजी सहज कही ये सोई ।''

कहने की जरूरत नहीं कि 'सहज' बने बिना सहज भाषा का निर्माण नहीं हो सकता । भाषा तो संप्रेषण, अभिव्यक्ति का साधन मात्र है । 'साध्य' तो मनुष्य का सर्वागीण विकास ही है । भाषा संबंधी विचार व्यक्त करते हूए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं – ''सडक पर चलनेवाला आदमी क्या बोलता है, यह बात भाषा का आदर्श नहीं होना चाहिए, देखना चाहिए कि क्या बोलने या न बोलने से मनुष्य उस उच्चतर आदर्श को प्राप्त कर सकता है, जिसे संक्षेप मनुष्यता कहा जाता है ।'' द्विवेदी जी भाषा को वक्तव्य वस्तु का वाहन भर मानते थे ।

आप जबकि जीवन जगत के सारे मानदंड धन संचलित, बाजार प्रेरित मानदड है, तो लोकतंत्र के चौथे स्तंभकार की भूमिका निभाते हुए हमें ध्यान रखना होगा कि वह भाषा जो मनुष्य को उसकी सामाजिक दुर्गति, दरिद्रता, अंध–संस्कार और परमुखापेक्षिता से न बचा सके, किसी काम रही थी नहीं है । ऐसा नहीं कि भाषा केवल इस सदी में बदल रही हैं । हिन्दी तब भी बदल रही थी जब 20 वीं सदी आ रही थी । जब भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने कहा था– ''हिन्दी नये चाल में डाली ।''

भाषा निरंतर बदलती है और उसका बदलते रहना उसकी नियति, प्रकृति और समृध्दी है । वह मुख्यतः संप्रेषणीयता के प्रति प्रतिबध्द

है । संप्रेषण की विश्वव्यापी सुविधा में विश्व को एक इकाई में बांध दिया है। हम परिवार की बोली बनाने की हद तक पहुँच चुके हैं। यहाँ तक कि नौनिहालों के अखंड व्यक्तित्व विकास के उद्देश से मात्र प्राथमिक तक की शिक्षा को मातृभाषा में दिये जाने की मांग हमारे सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश भी समझ नहीं पा रहे । चौथी कक्षा तक घर और विद्यालयों की भाषा का एक होना विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास और आत्मबल के लिए जरूरी है । हमारी पीढी तथा बाद की पीढीयों नें भी इसका अनुभव लिया है । पॉचवी कक्षा से अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं को न पढाने की मांग तो कोई नहीं कर रहा ।

आज अखबारी भाषा 'सब चलता है' की बाजारी मनोवृत्ति का शिकार हो रही हैं । अखबार की भाषा सरल, सुबोध और सुगम्य होनी चाहिए ।इसके लिए कुछ विदेशी शब्दों का आ जाना जैसे ट्रेन टिकट, पोस्ट ऑफिस आदि स्वाभाविक हैं । किन्तु कोशिश होनी चाहिए कि अधिकतर दुरह शब्दों जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर, मैन्युफैक्चारिंग, अडवाइजरी बोर्ड या फिर समाज के लिए सोसायटी जैसे शब्दो का हम हिन्दी विकल्प लें । भाषा के लचीलेपन और व्यावहारिक रूप से हमें परहेज नहीं होना चाहिए । प्रधानमंत्री को 'पी, एम.' वित्तमंत्र को 'एम.एम.', निष्ठा के लिए डेडिकेशन, शिक्षा को एज्युकेशन जैसे शब्दों के प्रयोग को अच्छी भाषा का उदाहरण नहीं माना जा सकता । इसमें कोई संदेह नहीं हिन्दी में आवश्यक लचीलापन है और वह सब कुछ पचाने की शक्ति रखती है, परंतु अन्य और समाचारों के रिश्ते को सांस्कृतिक संदर्भो में भी देखने की आवश्यकता है ।

'' आज पत्रकारिता के सारे मानक पारिवर्तित हो रहे हैं किन्तु इन चार मून्यों से विचलित होने के पश्चात पत्रकार की सार्थकता के आगे प्रश्नवाचक चिन्ह लग जाएगा । इसमें सारे गुण पत्रकार में उसकी शिक्षा, अध्यवास तथा किसी व्यक्ति के व्यवसाय और उसके व्यक्तित्व में गहरी आस्था रखकर ही आ सकते है ।'' (द. प्रोफेशनल जर्नलिस्ट, जान होहेनबर्ग, पृष्ठ 3

आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी ने कहा कि – अपनी परंपरा भी जानना चाहिए और प्रचलन भी । भाषा तो प्रचलन और परंपरा में ढलती हैं । भाषा की जान प्रचलन में होती है । राजभाषा की चर्चा की गई है । राष्ट्रभाषा की चर्चा ही नहीं हैं । तथा शब्द का अर्थ तो ठीक से पकडिए । परंपरा में प्रचलित अर्थो का ध्यान नहीं रखेंगे तो बहुत बडी भ्रांति पैदा होगी । भाषा की शैली पर ही ज्ञान की गंगा उतरती है ।''

वेशक भाषाएँ भी समयानुसार बदलती है, बढती है आज हम जो हिन्दी लिखते–बोलते है, वह सन् 1826 में आरंभ हुए प्रथम हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तंड' की हिन्दी से भिन्न है और समुन्नत भी । लेकिन हर बदलाव और बढवार को स्वागत योग्य समझकर गले नहीं लगाया जा सकता । दिल के धडकन की गति में, रक्त में, शर्करा की मात्रा में हेरफेर, शरीर के किसी अवयव में कोशिकाओं की अनियंत्रित वृध्दि अस्वास्थ के ही लक्षण समझे जाएँगे । जो जीना चाहता हो, उसे उनका इलाज करना ही पडेगा ।

मानवी सभ्यता का एक अभिन्न अंग है भाषा एक ऐसी प्रणाली है जिसका उपयोग मानवी अभिव्यक्ति, सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति, संवर्धन और प्रक्षेपण के लिए अत्याधिक प्रभावी है । भाषा का उद्रम, विकास, उपयोग पध्दति और परिणामकारकता के अध्ययन की एक स्वतंत्र ज्ञानशाखा 'भाषा विज्ञान' कि रूप में अस्तित्व में है । भारतीय में है । भारतीय परिप्रेक्ष्य में भाषा – संवाद प्रणाली का विकास और उत्कर्ष हर भारतीय के लिए गौरवान्वित अनुभव है । अतिप्राचीन काल की सिंधु–संस्कृति की भाषा से देवनागरी लिपि में लिखी जानेवाली, व्याकरण, शब्दोत्पति एवं विस्तार के लिए समस्त भाषाओं में शास्त्रशुध्द मानी जानेवाली संस्कृत भाषा की उत्पत्ति, उत्कर्ष और अभिवृध्दि तक और उसके पश्चात प्राकृत और पाली जैसी मधुर जनवाणियो से आज की 16 समृध्द भारतीय भाषाएँ भाषिक विकास का एक अद्भुत अनुभव हैं । भारतीय संस्कृति विभिन्नता की प्रतीक इन सारी भाषाओं की अपनी अपनी विशेषताएँ हैं । जिनमें समृध्द व्याकरण शब्द–संग्रह, अभिव्यक्ति की नागरी और ग्रामीण शैलियाँ विभिन्न प्रादेशिक और भौगोलिक विशेषताओं की अभिव्यक्ति करनेवाली बोलिया उपभाषाओं का वैभव आदि प्रमुख हैं ।

संवाद किसी भी जीवित प्राणी की नैसर्गिक वृत्ति होती है और मौलिक संवाद मानवी विकास का निर्देशांक भी थी । लोककला एवं लोकसंस्कृति में विचार, सूचना भावना आदि के आदान–प्रदान के लिए भाषा एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभरी । बोली भाषाओं का चहुमुखी विकास इसी दौर में हुआ पर्यायवाची शब्द, काव्य, भाषालंकार, नादमय और लयकारी से ओतप्रोत उच्चारण की एक परिष्कृत शैली का चलन इसी युग की देन हैं ।

वैश्वीकरण का सीधा परिणाम भाषा पर हुआ है । आजकाल समाचार पत्रों में समाचार का पाठ्य जिस भाषा में होता है उसमें अंग्रेजी और अन्य भाषाओं से उधार लिए गए शब्दों का धडल्ले से उपयोग होता दिखाई देता है । जैसे – भारत के लिए इंडीया, उपयोग में लाना के लिए यूज करना, रसोई के लिए किचन, पलंग के लिए बेड, मधुमेह के लिए शुगर की बीमारी आदि । पाठको को यही भाषा समझ में आती है से लेकर हमने भाषा की शुध्दता का ठेका नहीं ले रखा है या आजकाल इसी भाषा का चलन है जैसी कई दलीलें दी जाती है । तकनीकि विकास का सीधा असर भाषा के उपयोग पर होता हुआ दिखाई देता है । वह यह कि कम्प्यूटर और मोबाइल के इस युग में भाषा की ओर होता दुर्लक्ष । जिनको भाषा की समझ है व कम्प्यूटर चलाना नही जानते और जिनको कम्प्यूटर चलाना आता हे व भाषा की समझ नहीं रखते । परिणामवश कम्प्यूटर में जो पाठ्य निर्माण किया जाता है वह शुध्दता की कसौटी पर खरा नही उतरता । शुध्द लेखन और शब्दयोगना को लेकर यह बिंदू और तीव्र होता है । देवनागरी लिपि में ह्स्व दीर्घ या यानी बडी छोटी 'ई' की अथवा बडे या छोटे 'उ' की भाषा का प्रयोग करने से लेकर अंग्रेजी के शब्दों के स्पेलिंग्स तक कुछ ना कुछ गडबडी हर दूसरे वाक्य में दिखाई देती है ।

निष्कर्षतः सूचना प्रौद्योगिकी का समाचार की भाषा पर दूरगामी एवं स्थायी परिणाम स्पष्ट दिखाई देते हैं जो कि भाषा कि अभिवृध्दिकारक कम और अवनतिकारक अधिक हैं । सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भाषीय संकट एवं अशुध्द लेखन का चलन बढता ही जा रहा है । नए संवेदनात्मक माध्यम (New interactive media) में नई पीढी ।

ग्रंथ सुचीः

1.उत्तर–आधुनिक साहित्यिक विमर्श – सुधीश पचौरी, रामकृष्ण प्रकाशन 2000
2.उत्तर आधुनिकता कुछ विचार – सुशान्त कुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, 2002
3.उपन्यास : स्वरूप और संवेदना –राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन 2010
4.उपन्यास का पुनर्जन्म – परमानंद श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन 2000

5.वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन ओर दाम्पत्य जीवन – साधना अग्रवाल, अशोक प्रकाशन 2001
6.साहित्य और संस्कृति – मोहन राकेश, किताबघर प्रकाशन 1990
7.भारतीय कला और संस्कृति – भगवतशरण उपाध्याय, राधाकृष्ण प्रकाशन 2002
8.साहित्य विधाओं की पृकृति – देवीशंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन 1999

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org